# भूमिका

# भूमिका

नयी पीढ़ी के अत्यंत विवादास्पद समीक्षक और समर्थ उपन्यासकार डॉ. देवेश ठाकुर का नाम समकालीन रचनाकारों में अपरिचित नहीं है । इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में विपुल लेखन किया है । प्रगतिचेता समीक्षक और कथाकार डॉ. देवेशजी अपनी निश्चित दृष्टि के लिए और अपनी स्पष्टवादिता के लिए विख्यात हैं । काव्य, समीक्षा, कहानी आदि विधाओं में सफलता से लेखन करते हुए भी इन्होंने उपन्यास लेखन में ख्याति अर्जित की है । बचपन से अभावों और विषमताओं के साथ जूझनेवाले देवेशजी ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण अत्यंत खुलेपन से किया है । मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण इन्होंने अपने लेखन में सर्वहारा वर्ग का पक्षधर होना पसंद किया है । उपन्यास क्षेत्र में विविध प्रयोग करते हुए इन्होने अपनी प्रयोगशीलता का और रचनाधर्मिता का परिचय दिया है ।

सर्वप्रथम, बी. ए. की पढ़ाई के दौरान मैंने 'भ्रमभंग' को पढ़ लिया और बार बार पढ़ा । 'भ्रमभंग' के चंदन में मैं अपनी छवि देखने लगा और 'चंदन' के साथ उसकी सभी कठिनाइयों को मैंने महसूस किया । इस प्रकार बीज के रूप डॉ. देवेशजी ने मेरे मस्तिष्क में स्थान ले लिया । जब एम. फिल के लघु-शोध-प्रबन्ध के विषय चुनाव का अवसर आया तब बीज रूपी 'देवेश ठाकुर' मनमें कुलबुलाने लगे और परिणामस्वरूप 'देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ' – एक अनुशीलन रूपी लघु-शोध प्रबन्धका निर्माण कार्य आरंभ हुआ । मैंने इस विषय को मेरे गुरु श्रद्धेय डॉ. वसंत केशव मोरेजी के सम्मुख रखा तो उन्होंने तुरन्त हामी भर दी ।

डॉ. देवेश ठाकुर के साहित्य पर विविध प्रकार की समीक्षाएँ, विवेचनाएँ एवं शोध-प्रबन्ध के रूप मे कार्य सम्पन्न हो चुका है । डॉ. नन्दलाल यादव का सम्पादित ग्रंथ 'देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार' देवेशजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देनेवाला महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है । प्रा. सतीश पाण्डेय के 'कथा-शिल्पी : देवेश ठाकुर' ग्रंथ में देवेशजी के उपन्यासों का शैलीगत अध्ययन प्रस्तुत किया है । डॉ. भानुदेव शुक्ल का ग्रंथ 'देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में' में शुक्लजी के प्रश्नों को देवेशजी के उत्तरों का विवरण सम्पादित किया है और देवेशजी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विविध पहलुओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है । प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध देवेश ठाकुर के उपन्यासों में महानगरीय समस्याओं का अनुशीलन करने का एक प्रयास मात्र है । इस दृष्टि से देवेशजी के उपन्यासों पर विचार करनेवाला कोई शोध-प्रबन्ध उपलब्ध नहीं है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के अध्ययन की सीमा को निर्धारित करते हुए देवेश ठाकुर के १९७५ से १९८९ तक लिखे 'भ्रमभंग', 'प्रिय शबनम!', 'काँचघर', 'इसीलिए', 'अपना अपना आकाश', 'जनगाथा' और 'गुरु-कुल' आदि सात उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन में उत्पन्न होनेवाली महानगरीय समस्याओं का अनुशीलन करना उचित समझा । प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रारम्भ में कुछ सवाल मेरे मन में उभर उठे –

**१) क्या देवेश ठाकुर के उपन्यासों में महानगरीय जीवन को अभिव्यक्ति मिली है ?**

**२) देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में महानगरीय जीवन की कौन-कौनसी समस्याओं का चित्रण किया है ?**

**३) देवेश ठाकुर ने किस वर्ग की महानगरीय समस्याओं का चित्रण किया है ?**

**४) महानगरीय समस्याओं का चित्रण करते समय देवेश ठाकुर ने किस समस्या पर अधिक बल दिया है ?**

देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याओं का अनुशीलन करते समय मैंने उपरोक्त सवालों का हल ढुँढने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध निम्नांकित चार अध्यायों में विभाजित है ।

**अध्याय - १**

प्रथम अध्याय में देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है । इस अध्याय में देवेशजी के जन्म से लेकर आज तक के जीवन क्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है, जिसका लेखक की कृतियों के साथ सीधा सम्बन्ध

है । 'कृतित्व' के अंतर्गत प्रारम्भिक रचनाओं से लेकर अप्रकाशित उपन्यास 'शून्य से शिखर तक' का संक्षेप में परिचय दिया है ।

**अध्याय - २**

द्वितीय अध्याय में देवेश ठाकुर के विवेच्य सात उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया है । देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याओं का चित्रण करते समय अध्ययन की दृष्टि से संक्षेप में उपन्यासों की कथावस्तु देना उचित समझा है । उपन्यास साहित्य के अंतर्गत 'भ्रमभंग', 'प्रिय शबनम!', 'काँचघर', 'इसीलिए', 'अपना अपना आकाश', 'जनगाथा' और 'गुरु-कुल' आदि का परिचय दिया है ।

**अध्याय - ३**

तृतीय अध्याय में 'देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ' एक अनुशीलन की पृष्ठभूमि के रूप में महानगरीय समस्याओं के स्वरूप का विवेचन किया है, जिसमें गाँव का स्वरूप, नगरीकरण के कारण, महानगरों का आकर्षण आदि विषयों पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत किया है ।

**अध्याय - ४**

चतुर्थ अध्याय में देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन और महानगरीय जीवन में उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं के विविध पहलुओं को उजागर करने की कोशिश की है । इन महानगरीय समस्याओं में विलासिता के बढ़ते चरण और स्त्री-पुरुष संम्बन्धों की शिथिलता पर विशेष बल दिया है ।

**उपसंहार**

इस प्रकार देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याओं का अनुशीलन करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में सार रूप में देने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा समय समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रद्धेय गुरुजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ ।

सर्वप्रथम कृतज्ञतासहित मैं आभार प्रकट करना चाहता हूँ श्रद्धेयवर डॉ. वसंत केशव मोरेजी का जिनकी अनुकंपा के बिना यह कार्य सम्पन्न ही नहीं हो सकता था । उनके उपकार से उऋण होना मेरे लिए संभव नहीं हैं । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डॉ. मोरेजी के सूक्ष्म निरीक्षण एवं निर्देशन का परिणाम है । इस शोध-प्रबन्ध के विषय चुनाव से लेकर अन्त तक उन्होंने मुझे अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए और हर समय मुझे उत्साहित ही किया । इन्होंने अपनी सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद भी इस लघु-शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय अत्यंत सूक्ष्मता से देखकर मुझे निरंतर नयी दृष्टि देने का प्रयास किया है ।

श्रद्धेय डॉ. देवेशजी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में मिला है । मेरी बम्बई यात्रा के दौरान प्रत्यक्ष देवेशजी से सम्पर्क ने मेरी अध्ययन की दिशा को प्रशस्त किया । उन्होंने मेरे अनुसन्धान कार्य में समय समय पर प्रत्यक्ष और पत्र रूप में अनेक प्रकारकी मौलिक सूचनाएँ दी, जिसके कारण इतस्तत भटकने वाला मेरा मन स्थिर हो सका । डॉ. देवेशजी की कृपा के बिना इस शोध प्रबन्ध का कार्य सम्पन्न होने में जरूर कठिनाइयाँ आती । मैं उनका हृदयपूर्वक आभारी हूँ ।

रामनारायण रुईया कॉलेज के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रद्धेय रामयतन सिंह 'भ्रमर' जी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य में उपयोगी किताबें देकर बम्बई में मेरी सहायता की है ।

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था के सेक्रेटरी, प्राचार्य अभयकुमारजी सालुंखे और तुलजाभवानी महाविद्यालय के प्राचार्य उत्तमरावजी देशमुख का प्रेम और सहायता के बिना मैं इस शोध कार्य की कल्पना भी नहीं कर सकता था । उन दोनों के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

आदरणीय डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड, प्रा. शरद कणबरकर, प्रा. मिस् रजनी भागवत, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले,

प्रा. सुनीलकुमार लवटे, प्रा. डॉ. शहाजी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

मेरी परमपूज्य माता जिसके आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कोई कार्य असंभव-सा है । मेरे भाईयों के सहयोग के कारण ही मैं इस कार्य को पूर्णत्व दे सका ।

उन अनेक आत्मीयों, मित्रों का मैं इस बहाने स्मरण करना चाहता हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरी सहायता की हैं और 'महानगरीय समस्याओं' की चर्चा में भी उन्होंने अपना योग दिया है । मिस् शर्मिला संकपाल (सहायक ग्रंथपाल, बम्बई विश्वविद्यालय) मिस् उल्का बागल, मिसेज् उज्वला चिपलुणकर, मिस् शुभांगी काडगावकर, डॉ. सुरेश देशपांडे (स्वरूप हॉस्पिटल) श्री. राजीव माजनालकर (आर्किटेक्ट), श्री. प्रदीप बोरगावकर (बोरगांवकर ॲण्ड सन्स), श्री. प्रमोद गुप्ता (महालक्ष्मी टायपिंग सेंटर), श्री घोटणे (स्मॅश झेरॉक्स सेंटर), श्री. जे. बी. जाधव, श्री. एस. एन. जाधव (ग्रंथपाल, शिवाजी विश्वविद्यालय), श्री. टी. एच. देसाई (ग्रंथपाल, तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापुर) प्रा. बी. डी. जाधव

मेरा बचपन का मित्र, कोल्हापुर का अध्यवसायी उद्योगपति अविनाश मुसले के प्रेम और सहृदयता के कारण ही मैं इस लघु-शोध प्रबन्ध को आधुनिक कॉम्पुटर की 'लेसर फोटो टाईप' तकनिकी से सुन्दर रूप दे सका, अन्यथा मैं यह साहस नहीं करता । अविनाश के परिवार के सभी सदस्य माँ, भाभी और भाइयों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होनें मुझे 'अपना' घर का सदस्य समझकर मेरे इस कार्य में सहयोग दिया ।

अविनाश का भाई, **'अक्षर-कला'** का संचालक, टाइपसेटर आनंद मुसले के दिन-रात अथक परिश्रम के बिना यह काम अधूरा रह जाता । अत्यंत थोडे समय में आनंद और उसके स्टाफ में काम करनेवाले मिस् जयश्री व्हडगे और भिमराव चावरे की कॉम्पुटर पर चलनेवाली उँगलियों का कमाल मैंने देखा है । इन सब के साथ अनेक प्रकार की सहायता करनेवाली प्रा. सुरेखा जोशी के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

यु. जी. सी. का मैं आभार मानता हूँ जिसने छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान कर मुझे चिंता मुक्त किया ।

अंत में, उन सभी विद्वानों, समीक्षकों, गुरुजनो के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिनकी कृतियों की सहायता से मैं यह शोध-कार्य पूर्ण कर सका ।

**प्रा. नंदकुमार रा. रानभरे**